॥ सद्गुरुदेवाय नमः॥

अवतार मेहेर बाबा की उद्घोषणा

११ दिसम्बर १९२५ को अवतार मेहेर बाबा ने उद्घोषणा की कि "मेरा वास्तविक स्वरुप अवर्णनीय है! जब मैं बोलूँगा उस समय कुछ लोगों को इसकी अनुभूति होगी। मेरा बाह्य रुप, क्राइस्ट, मोहम्मद, बुद्ध, कृष्ण, राम और जरयुस्त्र से मिलता-जुलता होगा। उन सबके चेहरे एवं बाल, मेरे ही थे।

- अवतार मेहेरबाबा

॥ सद्गुरुदेवाय नमः॥

धर्म का सत्य

मैं किसी धर्म का नहीं हूँ , सब धर्म मेरे हैं । मेरे स्वयं का धर्म, मेरा पुरातन पुरुष होना है और जो धर्म मैं सबको बतलाता हूँ , वह है- ईश्वर के लिए प्रेम,जो कि सभी धर्मों का सत्य है।

यह प्रेम सभी का हो सकता है ,चाहे वो ऊँचा हो या नीचा हो, धनवान हो या गरीब हो । हर जाति और पंथ का हर जन, ईश्वर से प्रेम कर सकता है । एक और केवल एक ही ईश्वर जो कि हम सब में बराबर रूप से विद्यमान है, प्रेम के द्वारा हम सब ईश्वर तक पहुँच सकते हैं ।

धर्म, जैसे पूजा-उपासना, हृदय से होना चाहिये। गिरजाघर, अगियारे, मंदिर और मस्जिदें खड़े करने की बजाय, लोग यदि अपने हृदयों में ईश्वर का घर स्थापित कर उस ईश्वर को रहने का सर्वोच्च स्थान दें, तो मेरा कार्य हो जायेगा। यदि वर्षों पुराने रीति-रिवाजों के कारण, यांत्रिक रुप से धर्मानुष्ठान एवं कर्म काण्डों को पूरा करने की बजाय, स्वार्थ रहित प्रेम से अपने संगी- साथियों की, यह ध्यान में रखते हुये कि उन सभी में बराबरी रुप से ईश्वर विद्यमान हैं, सेवा करें और यह जानते हुये कि इस तरह से सेवा करते हुये वे मेरी ही सेवा कर रहें हैं, मेरा कार्य पूरा हो जायेगा।

- अवतार मेहेरबाबा

ॐ यह सच बात है कि मैं परमात्मा हूँ। मैं ऊँचे से ऊँचा हूँ।

ॐ मैं विश्व का स्वामी हूँ और अपने प्रेमियों का दास हूँ।

ॐ मैं हरेक में व्यवस्था पैदा करने वाली ज्योति हूँ। मैं पुरातन पुरुष हूँ।

ॐ मैं पुरातन पुरुष हूँ, मेरी मर्जी के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। मैं वह 'एक' हूँ जो हरेक विषय में सब कुछ जानता हूँ।

ॐ मैं वही एक हूँ जो मानव जाति के बीच सदैव खोया और पाया जाता है।

ॐ मैं वह दैवी प्रियतम हूँ, जो तुम्हें इतना अधिक प्यार करता है, जितना तुम ख़ुद भी अपने आप से नहीं कर सकते।

ॐ मैं कोई धर्म-संप्रदाय, समाज या संगठन स्थापित करने नहीं आया; और न मैं कोई नया धर्म ही स्थापित करने आया हूँ, मैं किसी नई चीज की स्थापना करने नहीं आया हूँ। मैं तो पुरातन में जीवन का संचार करने के लिये आया हूँ।

ॐ मैं हर स्तर पर तुम लोगों से एक रूप हूँ; किन्तु इसका ज्ञान तुम्हें केवल उस समय होता है जब तुम्हारा अहंकार और तुम्हारी बुद्धि हस्तक्षेप नहीं करते। तब मैं अपने सत्य रुप में दिखाई पड़ता हूँ।

ॐ निःस्वार्थ सेवा और प्रेम जुड़वा ईश्वरीय गुण हैं।

ॐ केवल प्रेम ही जानता है कि बदले का सौदा किये बिना कैसे दिया जाता है।

विश्व व्यापी प्रार्थना

(सन 1953 में युग -अवतार मेहेर बाबा द्वारा प्रदत्त)

हे परवरदिगार !

सबके राखनहार और सबकी रक्षा करने वाले ।

तुम्हारा कोई आदि नहीं है ,और न तुम्हारा कोई अन्त है !

तुम अद्वैत हो, तुम तुलना से परे हो , और तुम्हारा पार कोई नहीं पा सकता है ।

तुम्हारा कोई रंग ओर रूप नहीं है,तुम आविर्भाव से रहित हो, और तुम गुणातीत हो ।

तुम अपार हो और अगाध हो, कल्पना और धारणा से परे हो, शाश्वत और अनश्वर हो ।

तुम अखण्ड्य हो , और दिव्य नेत्रों के सिवाय और किसी भी प्रकार से तुम्हें कोई नहीं देख सकता है ।

तुम्हारा अस्तित्व सदैव था,तुम सदैव रहते हो , और तुम सदैव रहोगे।

तुम सर्वत्र हो, तुम हर वस्तु में हो , और तुम हर जगह से परे तथा हर वस्तु से परे भी हो ।

तुम आकाश में हो और पाताल में हो । तुम व्यक्त हो और अव्यक्त हो , तुम सब लोकों पर हो , और समस्त लोकों से परे हो ।

तुम तीनों भुवनों में हो, और तीनों भुवनों से परे भी हो ।

तुम अगोचर हो और स्वतंत्र हो ।

तुम सृष्टि के रचने वाले हो , स्वामियों के स्वामी हो , समस्त मनों और हृदयों के ज्ञाता हो , तुम सर्वशक्तिमान हो और सर्वव्यापी हो ।

तुम अनन्त ज्ञान हो, अनन्त शक्ति हो, और अनन्त आनन्द हो ।

तुम ज्ञान के महासागर हो, सर्वज्ञ हो , अनन्त ज्ञान रखने वाले हो , तुम भूत, वर्तमान और भविष्य के ज्ञाता हो, और तुम स्वयम् ज्ञान हो।

तुम पूर्ण दयामय हो और सतत् परहितकारी हो ।

तुम आत्माओं की आत्मा हो, और अनन्त गुणों से सम्पन्न एक परमात्मा हो ।

तुम सत्य , ज्ञान और परमानन्द की त्रिमूर्ति हो ।

तुम सत्य के मूल हो, प्रेम के महासागर हो ।

तुम सनातन सत्ता हो ,ऊँचों में सबसे ऊँचे हो, तुम प्रभु और परमेश्वर हो, तुम परब्रम्ह हो, और परात्पर परब्रम्ह भी हो, तुम परब्रम्ह परमात्मा हो, अल्लाह हो, इलाही हो, यज़दान हो, अहूरमज्द़ हो और प्रियतम ईश्वर हो ।

तुम्हारा नाम एज़द अर्थात् एकमेव पूज्य है ।

''प्रार्थना किसी उद्देश्य से प्रेरित न होकर, मुक्त हुई आत्मा की आत्म-अभिव्यक्ति होती है। यह गुणज्ञता के आनंद से भरी हुई, मनुष्य के हृदय से फूटकर बहती है''

मैं ही राम था, मैं ही कृष्ण था, और अब मैं मेहेर बाबा हूँ।

मैं किसी धर्म का नहीं, प्रत्येक धर्म मेरा है।

- अवतार मेहेरबाबा

प्रायश्चित प्रार्थना

(सन1952 में युग–अवतार मेहेरबाबा द्वारा प्रदत्त)

हे असीम दया के निधि, प्रभुराज !

हम अपने सब पापों के लिये पश्चाताप करते हैं । हर एक विचार के लिये जो असत्य, अनुचित या गन्दा था , हर एक बोले हुये शब्द के लिये जिसे बोलना हमें उचित न था और हर एक कर्म के लिये जिसे करना हमें उचित न था । स्वार्थ से प्रेरित हर एक कर्म ,शब्द और विचार के लिये तथा द्वेष प्रेरित हर एक कर्म, शब्द और विचार के लिये हम पश्चाताप करते हैं ।

विशेषकर हर एक कामुक विचार तथा क्रिया के लिये, ऐसे हर एक वचन के लिये जिसको हमने पूरा नहीं किया, सब असत्य वचनों के लिए और सभी निन्दा, पाखण्ड, दम्भ या लोगों के पीछे उनके दोष बताने के लिये हम अनुताप करते हैं ।

और खासकर, दूसरों का नाश करने वाले हर एक कर्म के लिए , दूसरों को दुःख देने वाले हर एक शब्द तथा कर्म के लिए तथा दूसरों पर दुःख गिरने की इच्छा करने के लिए हम अनुताप करते हैं

हे प्रभुराज ! आप हम पर असीम दया करके हमारे किये हुये पापों को क्षमा कीजिये । और , वैसे ही आपकी मर्जी के अनुसार विचार करने में, बोलने में तथा कार्य करने में जो हमारी असमर्थता सदा रहती आई है, उसको भी क्षमा कीजिये।

यही हमारी आपसे प्रार्थना है ।

– अवतार मेहेरबाबा

बाबा प्रेमियों के लिये प्रार्थना

प्रियतम परमात्मा !

हमारी ऐसी सहायता कर कि हम तुझसे अधिकाधिक प्रेम करें , और अधिक और अधिक और फिर उससे भी अधिक प्रेम करें ,

जब तक कि हम तुझसें मिलकर एक हो जाने के पात्र न बन जायें ,

और तू हम सबकी ऐसी सहायता कर कि हम अन्त -अन्त तक बाबा का दामन दृढ़ता से पकड़े रहें ।

- अवतार मेहेरबाबा

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

आदि सचेतन, शांति निकेतन
(हिन्दी आरती)

हुआ लहर से ही है जिसकी सृष्टि का निर्माण ।
उसकी दैवी अनन्तता का , कैसे हो अनुमान ॥
आदि सचेतन, शांति निकेतन,आदि सचेतन, शांति निकेतन
नमो ब्रम्ह आओ । मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ।
प्रेम-दीप मैं हिये जलाऊँ , निबिड़ अंधेरा मिटता पाऊँ
अपना सब कुछ तुम्हें चढ़ाऊँ , तुम मुझको सरसाओ ॥
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ॥
जीवन की हर साँस हमारी, बन जाये प्रभु गति तुम्हारी-
हे करूणाकर लीलाधारी तुम करुणा बरसाओ ॥
मेहेर प्रभु , आरती अपनाओ ॥
बने आरती जीवन मेरा, आदि - अन्त का लय हो घेरा
खुलें नयन और दिखे सबेरा , तुम मुझमें छा जाओ ।
मेहेर प्रभु आरती अपनाओ ॥

- भाऊ कलचुरी

इस आरती की कुछ पंक्तियाँ प्रियतम मेहेर बाबा ने अपनी मंडली के जन भाऊ कलचुरी को दी थीं । इसको बाबा ने अहमद नगर केन्द्र के बाबा प्रेमियों से विशेष रूप से सुना ।

आह्वान

हरि !परमात्मा ! अल्लाह ,

अहूरमज़्द ! गाड ! यजदान हू !

जय " मेहेर " साहिबे - जमाँ !

जय जय निराली शान हू !!

जय भक्त उनके मस्त उनके

खींच लाते जो उन्हें भूलोक पर !

धूल उनकी सिर लगाऊँ , हिये लाऊँ -

प्रेम के उनके सहारे " मेहेर" को मैं पाय जाऊँ ।

– केशव नारायण निगम

मेहेर चालीसा

युग अवतार मेहेर बाबा के एक अनन्य प्रेमी एवं कर्याकर्ता , हमीरपुर (उ.प्र.) के स्वर्गीय श्री केशव नारायण निगम की अन्तरात्मा से निकले, मेहेरबाबा की उपस्थिति में सजीव उद्‌गारों का नाम " मेहेरचालीसा"दिया गया है जो ४० पदों में है । यह प्रेम - चालीसा सदियों -सदियों तक मेहेरबाबा प्रेमियों के द्वारा गुन -गुनाई जावेगी । इसका पाठ करते समय केशव नारायण निगम के नेत्रों से अविरल अश्रु धारा प्रवाहित हो रही थी और इस धारा में स्नान करते हुए, प्रियतम अवतार मेहेरबाबा गद्‌गद् होते हुए स्वयं भी अश्रु बहा रहे थे । कैसा रहा होगा एक प्रेमी का प्रियतम से आंतरिक मिलन । इसका आनंद आप भी, इसका पाठ करते हुए ,आज भी ले सकते हैं ।

जय बाबा ! जय अन्तर्यामी ! जय अनन्त । जय जगदाधार !
पूरण ब्रह्म सनातन स्वामी, अखिल विश्व के पालनहार ॥१॥

जय सौम्य मूर्ति ! जय शुभ, पावन ! जय मंगलकारी !
भक्त जनन की आश एक, जय-जय अनन्त लीलाधारी ॥२॥

युग के राही धर्म - सिपाही, जय तप के भण्डार हरे !
दरसमात्र से गति सुधरै अरु क्षार होंहिं अघपुञ्ज खरे ॥३॥

निराकार साकार रूप, जय नर - नारायण दोऊ !
भीतर बाहर सरग पतारन, तुम्हें छोड़ नहिं कोऊ॥४॥

भक्तन के जय "बाबा" ! जय -जय "बाबाजान" के "मेहेरवान"!
'उपासनी' के भण्डारी जय - हे ! सुर - कुल - पंकज भानु । ५॥

सिद्ध जनन के शंहशाह,जय दिव्य - सनातन ज्योती !
निर्विकार जय धर्म - मूर्ति !, जय शान्ति अखण्ड विभूती ॥ ६॥

तुम सन प्रीति करे से प्रानी, तुम समान हुई जाहीं!
जनम-जनम के पातक छूटैं, अन्त मेहेरपद पाहीं ॥७॥

व्याकुल मानव को हो तुम , अब पार लगाने आये ।
देश जाति और धर्म रंग भेद मिटाने आये ॥८॥

जगती को दिखलाने शक्ती, भक्ती की फैलाने महिमा।
प्रगट हुये शीरींमाई से, सत्जीवन की लेकर गरिमा ॥९॥

मैं गाऊँ क्या तुम्हरी महिमा, शेष शारदा पार न पाहीं ।
तुम हो अनन्त महिमा अनन्त, अन्त तुमहिं में सबहिं समाहीं ॥१०॥

मर्यादा के राखन हित तुम, मर्यादा पुरूषोत्तम बन आये ।
होकर अनन्त व्यापी दिगन्त, मर्यादा में बँधकर आये ॥११॥

तुमहिं बने गिरधर मीरा के, सूरदास के श्याम ।
नरसी के थे सामलिया तुम, तुलसीदास के राम ।। १२ ।।

मेरे हो तुम प्रियतम बाबा, हिय में आन विराजे हो ।
अमित कृपादृष्टि सेवक पर, मन-मन्दिर में राजे हो ॥१३॥

तुमहिं परस जन्मन को पापी, आज निहाल भयो रे ।
तुव पद-पंकज पाकर पावन, त्रय सन्ताप दह्यो रे ॥१४॥

चाहूँ नहीं जगत का वैभव, ऋद्धि सिद्धि नहीं चाहूँ ।
दुनिया दौलत माल खजाना, तुमहिं पाइ ठुकराऊँ॥१५॥

चाहूँ सदा सलोनी मूरत, यहै देख हरषाऊँ ।
इसको ध्याऊँ इसको गाऊँ, इस पर बलि-बलि जाऊँ ॥१६॥

श्रवण सुनैं तौ नाम तिहारो, रसना तुव गुण गावै ।
छोड़ जगत के फन्दे मनुवाँ, एक तुमहिं को ध्यावे ॥१७॥

बसो मोर नैनन में ऐसे, तुमहिं छोड़ नहीं और लखाई ।
सुरति एक रट मेहेर नाम की, दूजो और न साई ।।१८।।

जब जब जनम धरौं धरनी में, सगुण रूप को पाऊँ ।
सेवा भक्ती पूरी करके, निरगुण माहिं समाऊँ ।।१९।।

मैं चरनन को दास तिहारो, निसदिन यहै मनाऊँ ।
करो कृपा ऐसी ठाकुरजू, तुव सेवा को पाऊँ ।। २०।।

जब जब धरनि माहिं तुम आओ, अधम-उधारन स्वामी।
मोहिं अधम को भूल न जाना, मौं तुम्हार अनुगामी ।। २१।।

तुव सेवा भक्ती दर्शन हित, मैं हूँ नर तन पाऊँ ।
पाइ प्रकाश तुम्हारो प्रभुवर, लीला देख जुड़ाऊँ ।।२२।।

तुलसी की मैं पाऊँ भक्ती, मीरा की वह मस्ती पाऊँ ।
झूम-झूम कर नाचूँ सन्मुख, प्रेम के आँसु बहाऊँ।।२३।।

भूल जगत सुध तन मन हू, श्रीचरण टेक रह जाऊँ ।
तुम्हीं साध्य आराध्य बनो मम, और कछू नहिं चाहूँ ।।२४।।

सूरदास की पाऊँ रसना, लीला तुव नित गाऊँ ।
निबल जान जो बाँह छुड़ाओ, हिये बाँध रह जाऊँ ।।२५।।

कबीरदास का मिलै फकीरी, निसदिन अलख जगाऊँ।
जतन जतन से ओढ़ चदरिया, जस की तस धर जाऊँ ॥२६॥

देह तजौं तौ काज तिहारे, गती जटायू पाऊँ ।
शान्तिमयी तुव गोद मिले, फिर धाम तिहारे जाऊँ ॥२७॥

शबरी के मैं बेर खिलाऊँ, साग विदुर का लाऊँ ।
खाओ प्रभूजी उसी प्रेम से, वारी तुम पर जाऊँ ॥२८॥

तरी अहिल्या गणिका सदना, तरेउ अजामिल भागी ।
बाल्मीकि हू पार भये, जिन 'मरा-मरा' रट लागी ॥२९॥

ऐसहि भाग्य मिले मोहिं "बाबा", एक यहै वर चाहूँ ।
बन निषाद चरणोदक पाऊँ, युग- युग हेतु जुड़ाऊँ ॥३०॥

ड्यूढी का मैं बनूँ पहरुवा, निसंदिन गश्त लगाऊँ ।
अंजनि सुत सम करूँ चाकरी, तुव दर्शन नित पाऊँ ॥३१॥

देव दनुज मानव ऋषि मुनि सब, द्वार तिहारे आवें ।
नारदमुनि वीणा से पावन, नाम तिहारो गावें ॥३२॥

तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णू, शिव अनादि तू ही मैं जानूँ ।
तू ही इन्द्र, बृहस्पति तू ही, त्रिभुवननाथ तुम्हीं को मानूँ ॥३३॥

जय सृष्टी के कर्ता धर्ता । जय प्रतिपालक त्रिभुवन के !
दीनबन्धु हे दयासिन्धु ! जय भक्त तुम्हारे तुम भक्तन के ॥३४॥

जय प्रेममूर्ति ! जय शान्तिमूर्ति ! जय दिव्यमूर्ति हे बाबा ।
जय पतितपावन भक्तवत्सल ! जय शक्तिपुञ्ज हे बाबा ॥३५॥

जय अधम-उधारन विपद-विदारन, तेजपुञ्ज अविनासी !
पावन मूर्ति पूर्ण मर्यादा, जय घट घट के वासी ॥३६॥

ऐसी कृपा होइ मो ऊपर, विनय करौं कर जोरी ।
मन-मन्दिर मम छोड़ न जाना, शरण पड़ा हूँ तोरी ॥३७॥

अटल रहे मम श्रद्धा भक्ती, अटल रहे यह प्रेम की ज्वाला ।
जरत जरत या में जर जाऊँ, बुझे तभी यह पावन ज्वाला ॥३८॥

जो ज्वाला प्रह्लादहिं दीन्हीं, भनैं सन्त सब कोई ।
गिरि से गिरेउ अग्नि में डारेउ, साँच को आँच न होई ॥३९॥

ध्रुब सम निष्ठा अचल मिले, जिन साक्षी है ध्रुबतारा ।
अमर मिलन हो प्रियतम तुमसे, छूटे यह जग सारा ॥४०॥

– केशवनारायण निगम

ईश्वर से प्रेम कैसे करें?

१२ सितम्बर १९५४ को अवतार मेहेरबाबा ने, अहमद नगर में एक दर्शन कार्यक्रम के दौरान, निम्न पंक्तियाँ लिखाई थीं -

ॐ ईश्वर से प्रेम करने का सर्वाधिक व्यावहारिक तरीका यह है कि हम अपने संगी-साथियों से प्रेम करें। यदि हम दूसरों के लिये उसी तरह महसूस करें, जैसे कि हम स्वयं प्रियजनों के लिये करते हैं तो हम ईश्वर से ही प्रेम कर रहे हैं।

ॐ यदि हम दूसरों के दोष बतलाने के बजाय, हम स्वयं के दोषों को देखें तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहें हैं।

ॐ यदि हम अपने स्वयं की सहायता के लिये दूसरों को लूटने की बजाय; दूसरों की सहायता करने के लिये हम स्वयं अपने को लूटें, तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहे हैं।

ॐ यदि हम दूसरों के कष्टों में कष्ट उठाते हैं और दूसरों की खुशी में अपनी खुशी महसूस करते हैं, तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहें हैं।

ॐ यदि हम स्वयं के दुर्भाग्य की चिंता करने के बजाय, अपने स्वयं को, कई-कई जनों से अधिक भाग्यवान समझें, तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहे हैं।

ॐ यदि हम अपने भाग्य को, उसकी (ईश्वर की) इच्छा समझकर धैर्य एवं संतोष से स्वीकार करें, तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहें।

ॐ यदि हम यह समझें और महसूस करें कि भक्ति एवं ईश्वर की पूजा का कार्य, किसी को दुःख या नुकसान पहुंचाना नहीं है, तो हम ईश्वर से प्रेम कर रहे हैं।

ॐ ईश्वर को जिस तरह से प्रेम किया जाना चाहिये, प्रेम करने के लिये हमें ईश्वर के लिये ही जीना और ईश्वर के लिये ही मरना होगा, यह जानते हुये कि जीवन का उद्देश्य ईश्वर से प्रेम करना है और उसे स्वयं में ही पाना है।

मेहेरबाबा के दस ईश्वरीय आदेश

ॐ इच्छारहित होने के सिवाय कुछ भी इच्छा न करो।

ॐ आशाओं से ऊपर उठने के सिवाय और किसी की आशा न करो।

ॐ कुछ नहीं चाहो और तुम्हें सब कुछ प्राप्त होगा।

ॐ अपनी कमजोरियों के सिवाय किसी से भी क्रोधित न हो।

ॐ अपने काम-पूर्ण व्यक्तित्व के सिवाय किसी और से घृणा न करो।

ॐ अधिक से अधिक सहनशीलता और न्याय की दौलत का मालिक बनने के लिये, लालची बनो।

ॐ इच्छाओं के विरुद्ध युद्ध छेड़ो, ईश्वरीयता तुम्हारे हाथ लगेगी।

ॐ यह समझते हुये कि दूसरों की सेवा करते हुए तुम मेरी ही सेवा कर रहे हो। सेवा करो।

ॐ पूर्णतः मेरी इच्छा के अधीन रहो और मेरी इच्छा तुम्हारी हो जायेगी।

ॐ मेरी कृपा के पात्र होने के लिये, तुम्हारा प्रलोभन, मेरे को लुभाने के लिये हो।

– अवतार मेहेरबाबा

॥ सद्गुरुदेवाय नमः॥

अवतार मेहेर बाबा की उद्घोषणा

११ दिसम्बर १९२५ को अवतार मेहेर बाबा ने उद्घोषणा की कि "मेरा वास्तविक स्वरुप अवर्णनीय है! जब मैं बोलूँगा उस समय कुछ लोगों को इसकी अनुभूति होगी। मेरा बाह्य रुप, क्राइस्ट, मोहम्मद, बुद्ध, कृष्ण, राम और जरयुस्त्र से मिलता-जुलता होगा। उन सबके चेहरे एवं बाल, मेरे ही थे।

- अवतार मेहेरबाबा

धर्म का सत्य

मैं किसी धर्म का नहीं हूँ , सब धर्म मेरे हैं । मेरे स्वयं का धर्म, मेरा पुरातन पुरुष होना है और जो धर्म मैं सबको बतलाता हूँ , वह है- ईश्वर के लिए प्रेम,जो कि सभी धर्मों का सत्य है।

यह प्रेम सभी का हो सकता है ,चाहे वो ऊँचा हो या नीचा हो, धनवान हो या गरीब हो । हर जाति और पंथ का हर जन, ईश्वर से प्रेम कर सकता है । एक और केवल एक ही ईश्वर जो कि हम सब में बराबर रूप से विद्यमान है, प्रेम के द्वारा हम सब ईश्वर तक पहुँच सकते हैं ।

धर्म, जैसे पूजा-उपासना, हृदय से होना चाहिये। गिरजाघर, अगियारे, मंदिर और मस्जिदें खड़े करने की बजाय, लोग यदि अपने हृदयों में ईश्वर का घर स्थापित कर उस ईश्वर को रहने का सर्वोच्च्य स्थान दें, तो मेरा कार्य हो जायेगा। यदि वर्षों पुराने रीति-रिवाजों के कारण, यांत्रिक रुप से धर्मानुष्ठान एवं कर्म काण्डों को पूरा करने की बजाय, स्वार्थ रहित प्रेम से अपने संगी- साथियों की, यह ध्यान में रखते हुये कि उन सभी में बराबरी रुप से ईश्वर विद्यमान हैं, सेवा करें और यह जानते हुये कि इस तरह से सेवा करते हुये वे मेरी ही सेवा कर रहें हैं, मेरा कार्य पूरा हो जायेगा।

- अवतार मेहेरबाबा